Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

पाश्चात्य नारीमुक्ति आंदोलनः एक विहंगावलोकन

कुमुद सिंहः शोध छात्रा आर. जे. कॅालेज,घाटकोपर, मुम्बई

विश्वफलक पर ईसाइयत एवं इस्लाम धर्मावलंबियों का अधिपत्य हैं। ईसाई धर्म की नींव पवित्र बाइबल व उसके प्रचारक चर्च हैं तो इस्लाम कुरान शरीफ को तरजीह देता है। दोनों धर्मों के धर्मग्रंथ पुरूष श्रेष्ठता को मान्य करते हैं। निम्नलिखित उदाहरण इसका प्रमाण हैं।

"'कुरान शरीफ घोषणा करता है-पुरूष औरत से उन गुणों के कारण श्रेष्ठ है, जो अल्लाह ने उसे उत्कृष्ट रूप से दिए हैं।'" "'... चर्च ने भी पुरूष-प्रधान समाज की सभ्यता का समर्थन किया हैं। जिसमें कि यह उचित है कि नारी पुरूष से संलग्न रहे पुरूष की विनम्र सेविका के रूप में रहकर ही वह अलौकिक संत का वरदान प्राप्त कर सकती है।'"

पाश्चात्य साहित्य एवं दर्शन में स्त्री के लिए कई विशेषण मिल जाएगें। जैसे मृत्यु, भय, पाप, गंदगी, शैतान का दरवाजा, अंधकार की शक्ति, मिथ्या, अफवाह, जादूगरनी, इत्यादि। परंतु स्त्री के सर्जक एवं पोषक रूप को सभी मुख्य धर्मों में सम्मान का स्थान दिया गया हैं। बात घूम-फिर कर वहीं पर आती है की जहाँ और जिस भूमिका में स्त्री पुरूष सत्ता को स्वीकारती है वह वहाँ पूज्यनीय है। लेकिन वह जहाँ अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाती है वहाँ उसे निकृष्ट करार कर दिया जाता है। हजारों वर्षों के क्रमिक विकास और धार्मिक कट्टरता ने समाज को अधिक स्त्री विरोधी बनाया है।

VARIORUM ISSN 0976-9714

Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

सदियों की दासता से मुक्ति की आकांक्षा का जन्म अभी गुजरी १७ वीं, - १८वीं सदी की देन है। पाश्चात्य नारीमुक्ति आंदोलन का आगाज गुलामप्रथा विरोधी तथा मजदूर आंदोलन के साथ हुआ। उपरोक्त आंदोलनो में सक्रिय सहभाग के बावजूद, स्त्रियों को खास लाभ नहीं हुआ। अपनी स्थिति को सुधारने के लिए स्त्रियों ने पहले असंगठित और बाद में संगठित लड़ाई शुरू की। स्त्री को गुलाम और मजदूर से भी नीचा समझनेवाले समाज को उसके 'स्वतंत्र व्यक्ति' होने का अहसास दिलाने के लिए स्त्रीमुक्ति आंदोलनो ने समाज के ठेकेदारों से गुहार लगाई।

सन् १८४० में गुलामप्रथा से निपटने के लिए 'ऐंटी स्लेवरी कन्वेंशन' की स्थापना हुई। इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली स्त्रियों को पुरूषों से कम व हीनतर होने का एहसास दिलाया गया। इसी की प्रतिक्रिया स्वरूप "१८४८ में 'सीनेका कौउटरी

कौउरीयर' में तीन सौ महिलाओं ने भाग लिया और यह सभा पाँच दिनों तक चली। यही समस्त नारीवादी आंदोलन की शुरूवात मानी जाती है। और इसी कारण यह नारीवादी आंदोलन के इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण भी है।"

गुलाम-प्रथा निर्मूलन के साथ ही मताधिकार आंदोलन भी शुरू किया गया था। परंतु यहाँ पर भी स्त्रियों को मताधिकार से अलग कर दिया गया। १९ वीं शताब्दी के अंतिम दशकों तक कई नारीवादी संगठन सक्रिय हो चुके थे। नारीवादी आंदोलनो से मध्यमवर्गीय एवं सर्वहारा स्त्रियाँ भी जुड़ चुकी थीं। कई महिला लेखिकाओं ने स्त्रीपक्ष की वकालत करते हुए मौजूदा व्यवस्था पर प्रहार किया। सिमोन द बोउवार की द सेकेन्ड सेक्स, एस. फायरस्टोन की

VARIORUM ISSN 0976-9714

Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

द डायलेटिक्स आफ सेक्स, जर्मन ग्रेयर की 'द फीमेल यूनिख' केट मिलेट की 'सैक्सुअल पालिटिक्स,' जे मिशेल की वीमेन: द लाँगेस्ट रिवोल्युशन, बेट्टी फ्राइडन की 'द फेमिनिन मिस्टिक', मेरी वोलस्टोनक्राफ्ट की ए विंडीकेशन ऑफ दि राइट आफ मैन तथा ए विंडीकेशन आफ दि राइट आफ वीमेन आदि वैचारिक पुस्तकों ने स्त्री की समस्या, उसके कारण, उसपर उपाय के साथ-साथ स्त्री एवं पुरूष के व्यवहार की तर्कसम्मत व्याख्या की।

फ्रांस, इंग्लैंड, अमेरिका जैसे विकसित, साधन संपन्न देशों में नारीवादी संगठनो एवं राजनैतिक सुधारों के फलस्वरूप स्त्रियों को कई महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हुए। मताधिकार उसमें से एक था। इंग्लैंड में १९२८ में अमेरिका में १९३३ में तथा फ्रांस में १९४५ में स्त्रियों को गताधिकार हासिल हो गया।

प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्धो के दौरान बड़े पैमाने पर नर-संहार हुआ। खाली जगहों को भरने के लिए तथा अतिरिक्त मानवाश्रम की आवश्यकता की पूर्ति के लिए स्त्रियों को बाहर निकलने का मौका मिला। घरेलु श्रम से बाजारी श्रम व्यवस्था में उतरने के कारण स्त्री को बाहरी असीमित क्षेत्र व उसकी ताकत का एहसास हुआ। युद्ध के समाप्त हो जाने पर एक बार पुन: स्त्रियों को घर लौट जाने की सलाह दी गई। परंतु नारीवादी संगठनों ने इसका प्रतिकार किया। अमेरिका में १९६४ में सिविल राइट एक्ट लागू हुआ जिसके तहत अश्वेतों और स्त्रियों को रोजगार के समान अवसर उपलब्ध हो गए। १९६६ में नॅशनल आर्गनायझेशन ऑफ विमेन की स्थापना हुई। सत्तर के दशक में नारीमुक्ति आंदोलनो ने एक अलग ही रूप ले

VARIORUM ISSN 0976-9714

Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

लिया। इसी कारण इस आंदोलन को कड़ा सामाजिक विरोध भी सहना पड़ा. डॉ. प्रभा खेतान के मतानुसार -

सत्तर के दशक में नारीवादी चिंतन को न केवल पितृसत्ता विरोधी बल्कि परिवार विरोधी, विवाह विरोधी, संतान विरोधी यहाँ तक की धर्म विरोधी और पुरूष विरोधी कह कर संबोधित किया जाने लगा।

आशारानी व्होरा अपनी पुस्तक नारी शोषण आईने और आयाम में १९७० के दशक के इसी आंदोलन के विषय में कहती हैं -

अतिवादी, प्रतिक्रियावादी व फूहड़ सेक्सी मोर्चे पर उत्तर आंदोलन अपने मूल उद्देश्य से भटक गया। हास्यास्पद और घृणास्पद बन विफलता की अँधेरी गलियों में उतरता चला गया।

नारीमुक्ति आंदोलनो के आरंभ से कई नारीवादी संगठनों का उदय हुआ। प्रमुख नारीवादी संगठन जिनके कार्यों के फलस्वरूप स्त्रियों की सामाजिक एवं राजनैतिक पक्षधरता बढी है उनमें से कुछ हैं।

१. वर्किंग विमेंस एसोसिएशन (स्थापना १८६८)

२. नेशनल राइट आफ लेबर फडरेशन, (स्थापना १८८१)

३. वीमेंस क्रिश्चियन टेंपरेंस यूनियन (स्थापना १८७४)

४. नेशनल वींमेस टेंपरेंत यूनियन लीग (स्थापना १९०३)

५. नेशनल आर्गनायझेशन आफ विमेन (स्थापना १९६६)

VARIORUM ISSN 0976-9714

Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

इन संगठनो ने मुख्यत: अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड जैसे विकसित देशों में अपना विस्तार किया। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं लगाया जाना चाहिए की नारीवाद इनकी देन हैं। विश्व के छोटे से छोटे देश में नारीवाद की लहर उठी। प्रत्येक की रणनीति अलग थी क्योंकी उनकी सांस्कृतिक आवश्यकताएँ अलग थीं, एक लंबी बहस, उलझन, माँग और आपूर्ति के तहत जो कुछ भी नारीवाद के हिस्से आया है वह अपूर्ण नहीं पर संपूर्ण भी नहीं है। और उसमे संपूर्णता की आशा रखना शायद उचित नहीं होगा। क्योंकि पूर्वी-पश्चिमी उच्च-मध्यम, गृहणी-कामकाजी, शिक्षित-अशिक्षित, दबंग-दब्बू नौकरानी-मालकिन और न जाने कितने विभाजन

स्त्रियों के बीच विद्यमान हैं। स्त्री-विमर्श, नारीमुक्ति, नारी उद्धार तथा नारीवाद में पाई जानेवाली विविधता उनके लक्ष्य (स्त्री) पर भी लागू होती हैं। इसी संदर्भ में अरूण प्रकाश लिखते हैं।

नारीवाद मूलत: अमरीकी-कनाडियन और पश्चिमी युरोपीय गोरी, मध्यवर्गीय स्त्रियों के नजरिए से ही चालित है, इसलिए नारीवाद को समग्र मानने के बजाए स्थानीय और विभिन्न प्रकार के नारीवादो पर बल देने की जरूरत है।

स्थानीय रीति-रिवाज मान्यताएँ, एवं निष्ठाने भी स्त्री पर अंकुश लगाए हैं। स्त्री की जकड़न को तभी दूर किया जा सकता है जब वह उन्हें तर्कपूर्ण रूप में देखने लगेगी। इसलिए समग्रता में नारीवाद का लक्ष्य निर्धारित अवश्य है परंतु उसकी स्थानीय आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। अत: प्रत्येक आर्थिक एवं सामाजिक स्तर तथा भौगोलिक क्षेत्र से उठी नारीमुक्ति की आवाज इसे एक व्यापक क्रांती बनाती है।

VARIORUM ISSN 0976-9714

Variorum, Vol.-01, Issue-II, November 2010

संदर्भ सूची:-

१) स्त्री उपेक्षिता: अनुवादक डॉ प्रभा खेतान हिन्द पॉकेट बुक्स पृ-५९से ९३

२) नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास: गीता सोलंकी, भारत पुस्तक भन्डारपृ. २०

३) बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ: डॉ प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन पृ.२१७

४) नारी शोषण-आईने एवं आयाम, आशारानी व्होरा, पृ.२४४

५) स्त्री मुक्ति का सपना:सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन पृ.५७

VARIORUM ISSN 0976-9714